दिनांक :- 01-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फारूक आजम (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड इतिहास
एकाई :- पाँच
विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास
पत्र :- एक
अध्याय :- उत्तर वैदिक काल स्त्रोत

अश्वमेध यज्ञ :- यह एक विस्तृत समारोह था। इसका उद्देश्य राज्य का विस्तार करना तथा राज्य के लोगो को सुख और समृद्धि प्रदान करना था। यह यज्ञ तीन दिनो तक चलता था। इस यज्ञ में राजा के साथ उसके चार राज्याधिकारी उसकी चार रानियाँ और 400 सेवक तथा अनेकानेक दर्शक भागलेते थे। एक विशेषकप से अभिषिक्त घोड़ो को एक साल तक घूमने के लिये छोड़ दिया जाता था।

Scanned with CamScanner

साल खत्म होने पर उस घोड़े को राजधानी में वापस लाया जाता था तथा 600 सांढों के साथ उसकी बलि दी जाती थी। इसके अलावा गौहरन (गवमायन), अश्वक्रीड़ा तथा रथधावन संस्कार भी आयोजित किये जाते थे जिस का उद्देश्य होता था राजा को सर्वोच्च दिखाना।

गौहरन संस्कार में राजा को किसी के घर से हांक कर गायों को झुंड ले लाया जाया जाने दिया जाता था। जिसकी रक्षा के लिये युद्ध होता था। जिसमें सदैव राजा विजयी होता था इसी तरह अश्वक्रीड़ा में तथा रथ धावन में राजा विजयी होता था ये दोनों जिसमें सदैव राजा विजयी होता था। इसी क्रमशः राजसूय तथा वाजपेय यज्ञ के अंग थे।

शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि राजा राष्ट्र का पोषक होता है। अब करारोपण प्रणाली नियमित

होने लगी थी और बली के अतिरिक्त शुल्क तथा भाग भी लिया जाने लगा था। अब बलि स्वैच्छिक कर नहीं बल्कि आवश्यक कर के रूप में स्थापित हो गया। संभवतः आय 16वां भाग कर के रूप में लिया जाता था। कर की अदायगी अन्न एवं पशु दोनों रूपों में होती थी। शतपथ ब्राह्मण में वैश्य के लिए बलिकृत शब्द से संकेत मिलता है कि कर का बोझ वैश्य वर्ग पर था।

प्रशासन :- जब कर की प्रणाली नियमित हो गई तो ऋग्वैदिक प्रशासनिक व्यवस्था में परिवर्तन हो गया। अधिकारियों की संख्या में वृद्धि हुई। कुछेक अधिकारियों की शक्ति में कटौती भी हुई। उदाहरण के लिये ग्रामीण अधिकारी की शक्ति में वृद्धि हुई एवं विशपति नामक अधिकारी की शक्ति में कटौती हुई। शतपथ ब्राह्मण में रत्नियों की चर्चा है।

Scanned with CamScanner

रत्नियों की संख्या 12 तक थी यथा (1) सेनानी (2) पुरोहित (3) युवराज (4) महिषी (रानी) (5) सूत (राजा का सारथी) (6) ग्रामीण (ग्राम का मुखिया) (7) क्षत्तृ या प्रतिहारी (द्वारपाल) (8) संग्रहित्री (कोषाध्यक्ष) (9) भागदुघ (कर संग्रहकर्ता) (10) अक्षवाप (पासे के खेल में राजा का सहयोगी) (11) पालागल (राजा का मित्र या विदूषक संदेशवाहक) ब्राह्मण में रत्नियों को वीर कहा गया है। इससे उनके महत्व का बोध होता है। इनके अलावा भी कुछ उच्च अधिकारियों की चर्चा मिलती है।

(a) कर्मार - उद्योग का अधिकार

(b) स्थपति - सुदूर क्षेत्रों का प्रशासन देखने वाला

(c) स्थपतिः - संभवतः यह सौ गाँवों का शासन देखता था ऋग्वेद में जीवग्रीव तथा उपनिषद में उग्र की चर्चा मिलती है इनसे हम पुलिस अधिकारी का आभास पाते हैं।

Scanned with CamScanner

रत्नियों में सभी वर्ग का प्रतिनिधित्व था। उदाहरण के लिए पुरोहित ब्राह्मण वर्ण के, राजन्य क्षत्रिय वर्ण के ग्रामणी, वैश्य वर्ण के (तैत्तिरीय ब्राह्मण के अनुसार) तथा तक्ष एवं रथकार शूद्र वर्ण के प्रतिनिधि थे।

राजा की शक्तियों पर सीमा :- उपरोक्त शक्तियाँ एवं अधिकारों के बावजूद राजा की शक्ति पर कतिपय सीमायें थीं- नहीं हो पाई थी इसलिये राजा के खजाने में अपेक्षित धन नहीं पहुँच पाता था। इस समय रक्त संबंध से पृथक स्थायी सेना का अभाव था। शतपथ ब्राह्मण में सुत एवं ग्रामणी को अराज नोराजकृत कहा गया है तथा मंत्री को राजनोराजकृत कहा गया है। राजसूय यज्ञ से पहले राजा द्वारा राज्य की रत्नियों को हवि प्रदान की जाती थी क्योंकि राजा को रत्नियों का सहयोग प्राप्त करना होता था।

Scanned with CamScanner

राजा की स्वेच्छाचारित्र पर रीति एवं परंपरा का अंकुश भी था। इसके अतिरिक्त वैदिक राजनीति में ब्रह्म का वाहक ब्राह्मण एवं क्षत्र का वाहक क्षत्रिय माना जाता था। ब्राह्मण अपना राजा सोम को मानता था।

कुछ हद तक सभा और समिति भी राजा की शक्ति पर नियंत्रण करती थीं यद्यपि उत्तर वैदिक काल में इनकी स्थिति में गिरावट आयी थी। उत्तर वैदिक काल में समिति की तुलना में सभा अधिक महत्वपूर्ण हो गई। अथर्ववेद में एक जगह सभा के सदस्यों को नरिष्ठा कहा गया है। इसका आशय होता है सामूहिक वाद-विवाद।

अर्थव्यवस्था

उत्तर वैदिक काल में कृषि आर्यों का मुख्य पेशा हो गई। तैत्तरीय उपनिषद में कहा गया है कि अन्न ही 'ब्रह्म' है। इसी अन्न से समस्त प्राणी उत्पन्न होते हैं। इस काल में पशुपालन

की महत्ता बरकरार थी। कृषि कार्य हल तथा बैल की सहायता से होता था।

अथर्ववेद का यह कथन है कि सर्वप्रथम पृथ्वीवेन ने हल और कृषि को जन्म दिया। जौ के अतिरिक्त अब गेहूं (गोधूम) तथा चावल (व्रीही) मुख्य फसल हो गई। तैतरीय संहिता के अनुसार वर्ष में दो फसले होती थी यव को शीत ऋतु में बोकर ग्रीष्म में काटा जाता था। अथर्ववेद में अतिवृष्टि, अनावृष्टि, हानिकारक जंतु आदि से फसलों की रक्षा के लिये तंत्र-मंत्र बतलाये गये है।

उपरोक्त फसलो के अलावा तैतरिय संहिता मे उड़द तिल, मास, मसूर आदि फसलों की चर्चा है।

यजुर्वेद में चावल की पांच किस्मो की चर्चा हुई है यथा- महाव्रिही, कृष्णव्रिही, शुक्लव्रीही,

Scanned with CamScanner